प्रश्न ३५—गुलाम कौन थे ? कुतुबुद्दीन ऐबक के शासन काल का वर्णन करो।

अथवा

गुलाम वंश का यह नाम क्यों पड़ा ? कुतुबुद्दीन का जीवन-चरित्र लिखते हुये उसके शासन काल की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिये ?

उत्तर—गजनी और गोर के सुल्तानों के यहाँ गुलामों की भरमार थी। इन गुलामों को सुल्तान पुत्र से भी अधिक प्यार करते थे। राजनैतिक दृष्टि से इन गुलामों का विशेष महत्व था। जैसा कि लेनपूल ने लिखा है—"एक योग्य शासक का पुत्र असफल हो सकता है किन्तु कभी-कभी उसका दास अपने स्वामी के समान प्रतिभापूर्ण सिद्ध होता है।"

इस प्रकार कहा जाता है कि सन्तान के अभाव में गुलाम लोग उत्तराधिकार का प्रश्न हल करने के लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते थे। मुहम्मद गोरी के पास बहुत से गुलाम थे जिनमें कुतुबुद्दीन ऐबक का नाम उल्लेखनीय है।

उसके चार गुलाम थे—एलदौज अफगानिस्तान में, कुबाचा सिंध में, बख्त्यार बंगाल में व ऐबक दिल्ली में महान् साम्राज्य के संस्थापक हुए। यहाँ पर कुतुबुद्दीन ऐबक का विस्तृत वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि विद्वानों का मत है कि उसने भारत में एक नये राजवंश की नींव डाली। उसके साम्राज्य को भारतीय इतिहास में तुर्क सल्तनत और उसके वंश को गुलाम वंश की संज्ञा दी गई है। कुतुबुद्दीन ऐबक के विषय में यहाँ तक भी कहा गया है कि वह भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक निर्माता था।

"He was the real founder of Muslim dominions in India."

—Lane Poole.

कुतुबुद्दीन तथा उसका शासन-काल

प्रारम्भिक जीवन

कुतुबुद्दीन तुर्किस्तान में पैदा हुआ था। बचपन में वह अपने सम्बन्धियों से बिछुड़ गया था, निशापुर के प्रधान काजी फकरुद्दीन ने उसे खरीद लिया। फकरुद्दीन की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन को मुहम्मद गोरी ने खरीद लिया। कुतुबुद्दीन ने निशापुर के काजी के यहाँ उचित शिक्षा प्राप्त कर ली थी। उसके सैनिक गुणों से आकर्षित हो कर सुलतान ने उसे अपने सेनापति के पद पर नियुक्त कर लिया और हिन्दुस्तान की विजय के समय वह उसको अपने साथ लाया था। हिन्दुस्तान की विजय के बाद उसने अपने भारतीय साम्राज्य का उसको गवर्नर नियुक्त किया था।

गवर्नर के रूप में

कुतुबुद्दीन ऐबक को मुहम्मद गोरी ने अपने भारतीय साम्राज्य का संरक्षक बनाया था। किन्तु ऐबक ने गोरी के गवर्नर के रूप में ही अधिक ख्याति प्राप्त की। लेनपूल ने लिखा है—

"Aibek's chief exploits were achieved during viceroyalty."

Lane Poole

मुहम्मद गोरी के गजनी चले जाने के बाद ऐबक ने मेरठ, कालिंजर, महोबा

आदि को जीतकर गोरी साम्राज्य की सीमा बढ़ाई। उसने ११९५ ई० में गुजरात को जीता, १२०२ में कालिंजर के चन्देल राजा परमाल को परास्त करके कालिंजर के अभेद्य दुर्ग पर अधिकार कर लिया। १२०५ ई० में खोखर जाति के युद्ध में ऐबक ने मुहम्मद गोरी की अधिक सहायता की। लेनपूल ने लिखा है कि—"ऐबक तथा बख्त्यार की शक्ति ने ही मुहम्मद गोरी की सफलताओं को पूर्ण किया था और लगभग विन्ध्याचल पर्वत के उत्तर का सम्पूर्ण भारत मुसलमानों के प्रभाव में था।"

सुल्तान के रूप में

१२०६ ई० में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक मुहम्मद गोरी के भारतीय प्रदेशों का शासक बन गया। अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए उसने गजनी के दास शासक ताजुद्दीन अलदौज की कन्या से विवाह कर लिया था और एक दूसरे शक्तिशाली गुलाम शमशुद्दीन इल्तुतमिश से अपनी कन्या का विवाह कर दिया था। इस प्रकार वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी शक्ति दृढ़ कर ली थी। किन्तु इतना होते हुए भी उसके सामने बहुत सी कठिनाइयाँ थीं।

उसकी समस्यायें

(१) ऐबक के सम्राट होने के समय गजनी में अलदौज, मुल्तान में कुबाचा, लखनौती में अख्तारुद्दीन ने अपने-अपने शासन स्थापित कर लिये थे।

(२) देश में पराजित राजपूत वंश अपनी शक्ति बढ़ाने में लगे थे।

(३) थोड़े काल में बिहार में अख्तारुद्दीन की मृत्यु होने के कारण अराजकता फैली। ख्वारिज्म का शाह दिल्ली और गजनी के राज्यों को हड़प लेने की योजना बना रहा था।

समस्याओं पर विजय

इन सब समस्याओं पर उसने विजय प्राप्त की थी।

(१) अलदौज की कन्या से विवाह करके अपनी शक्ति बढ़ाई।

(२) १२०८ ई० में नासिरुद्दीन कुबाचा पर आक्रमण करके विजय प्राप्त की।

(३) बङ्गाल के विद्रोह को उसने शान्त कर दिया।

(४) उसने अपने शासन में कुतुब मीनार का निर्माण भी आरम्भ किया था।

(५) इसके अतिरिक्त अजमेर में एक प्रसिद्ध मस्जिद भी बनवाई थी जो कि "अढ़ाई दिन के झोपड़े" के नाम से प्रसिद्ध है। १२१० ई० में पोलो खेलते हुए घोड़े से गिर कर उसका देहान्त हो गया। उसके मृतक शरीर को लाहौर में दफनाया गया और वहीं उसका मकबरा भी बनवाया गया, जो भारत में प्रथम स्वतन्त्र तुर्की सुलतान की याद दिला रहा है।

कुतुबुद्दीन का चरित्र

कुतुबुद्दीन ने एक साम्राज्य का निर्माण किया। शासन-प्रबन्ध करने में भी उसने अपनी कुशलता का पूर्ण परिचय दिया। हसन निजामी का कथन है कि—"उसने अपने विस्तृत प्रान्तों का शासन-प्रबन्ध न्याय के तरीकों से किया और उसके राज्य में प्रजा सुखी थी।"

"The viceroy administered his wide provinces in the ways of justice and the people were happy."

—Hasan Nizami

उसके न्याय का वर्णन करते हुए लेनपूल ने लिखा है कि—"उसके राज्य में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे और सड़कें डाकुओं से स्वतन्त्र थीं। हिन्दू ऊँच हो या नीच, आदर की दृष्टि से देखा जाता था।"

उसके दान का वर्णन करते हुए विद्वानों ने उसे लाखबख्श की उपाधि दी है। किन्तु इतना होते हुए भी कुतुबुद्दीन ऐबक एक कट्टर मुसलमान था। यद्यपि उस में धार्मिक सहिष्णुता थी, फिर भी वह इस्लाम के रक्षक के रूप में महान सैनिक था। जैसा कि एक इतिहासकार ने लिखा है—

"The realm was filled with friends and cleaned o foes. His bounty was continuous and so was hi slaughter."

निष्कर्ष

कुतुबुद्दीन का इतिहास में विशेष स्थान है। प्रसिद्ध पुस्तक तबकाते नासिर के अनुसार कुतुबुद्दीन ऐबक लाखों का दान करता था और लाखों की हत्या भी कर देता था। किन्तु इतना होते हुए भी कुतुबुद्दीन ऐबक में महान शासक के गुण थे। निर्दयी होते हुए भी वह कला का प्रेमी था।

प्रश्न की झलक

परिचय—मुहम्मद गोरी के बहुत से दास थे, उनमें से एक दास कुतुबुद्दी